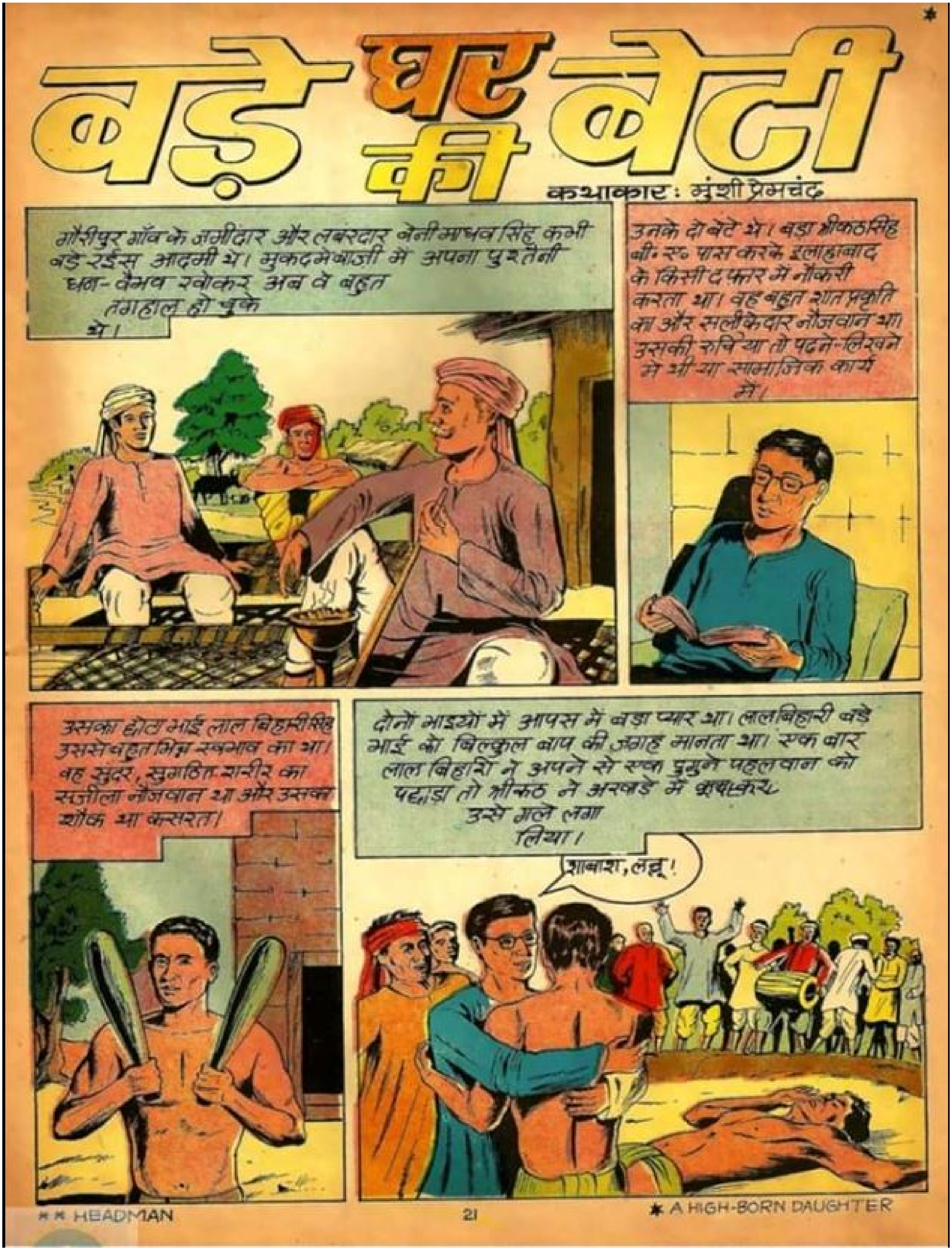
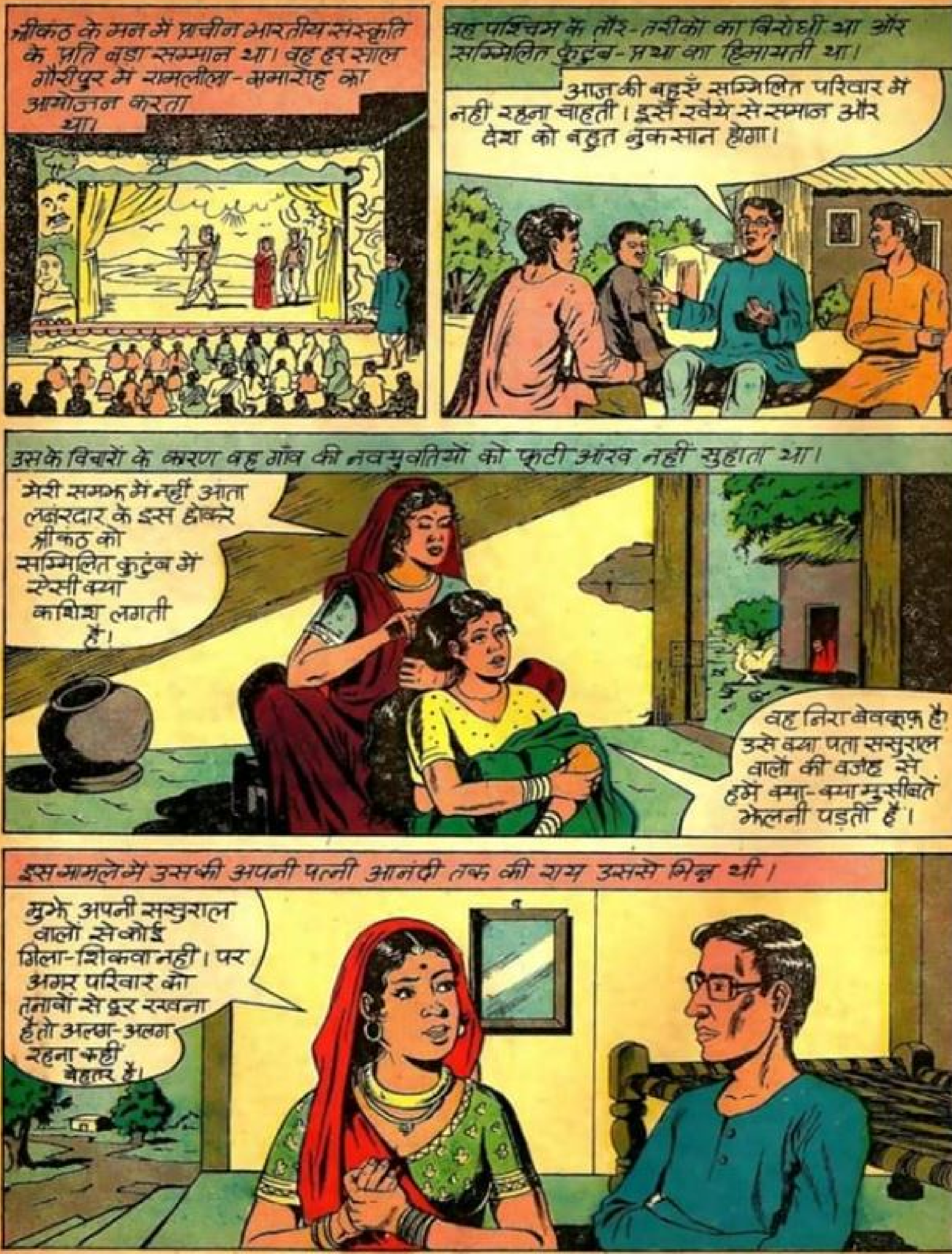

बड़े घर की बेटी
कथाकार: मुंशी प्रेमचंद
गौरीपुर गाँव के जमींदार और लंबरदार बेनीमाधव सिंह कभी बड़े रईस आदमी थे। मुकदमेबाजी में अपना पुश्तैनी धन-वैभव खोकर अब वे बहुत तंगहाल हो चुके थे।
उनके दो बेटे थे। बड़ा श्रीकंठसिंह बी॰ ए॰ पास करके इलाहाबाद के किसी दफ्तर में नौकरी करता था। वह बहुत शांत प्रकृति का और सलीकेदार नौजवान था। उसकी रुचियां तो पढ़ने-लिखने में थी या सामाजिक कार्यों में।
उसका छोटा भाई लाल बिहारीसिंह उससे बहुत भिन्न स्वभाव का था। वह सुंदर, सुगठित शरीर का सजीला नौजवान था और उसका शौक था कसरत।
दोनों भाइयों में आपस में बड़ा प्यार था। लालबिहारी बड़े भाई को बिल्कुल बाप की जगह मानता था। एक बार लाल बिहारी ने अपने से दुगुने पहलवान को पछाड़ा तो श्रीकंठ ने अखाड़े में कूदकर उसे गले लगा लिया।
शाबाश, लल्लू!



श्रीकंठ के मन में प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति बड़ा सम्मान था। वह हर साल गौरीपुर में रामलीला-समारोह का आयोजन करता था।
वह पश्चिम के तौर-तरीकों का विरोधी था और सम्मिलित कुटुंब-प्रथा का हिमायती था।
आज की बहुएँ सम्मिलित परिवार में नहीं रहना चाहती। इस रवैये से समाज और देश को बहुत नुकसान होगा।
उसके विचारों के कारण वह गाँव की नवयुवतियों को फूटी आँख नहीं सुहाता था।
मेरी समझ में नहीं आता लंबरदार के इस छोकरे श्रीकंठ को सम्मिलित कुटुंब में ऐसी क्या कशिश लगती है।
वह निरा बेवकूफ़ है। उसे क्या पता ससुराल वालों की वजह से हमें क्या-क्या मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं।
इस मामले में उसकी अपनी पत्नी आनंदी तक की राय उससे भिन्न थी।
मुझे अपनी ससुराल वालों से कोई गिला-शिकवा नहीं। पर अगर परिवार को तनावों से दूर रखना है तो अलग-अलग रहना कहीं बेहतर है।

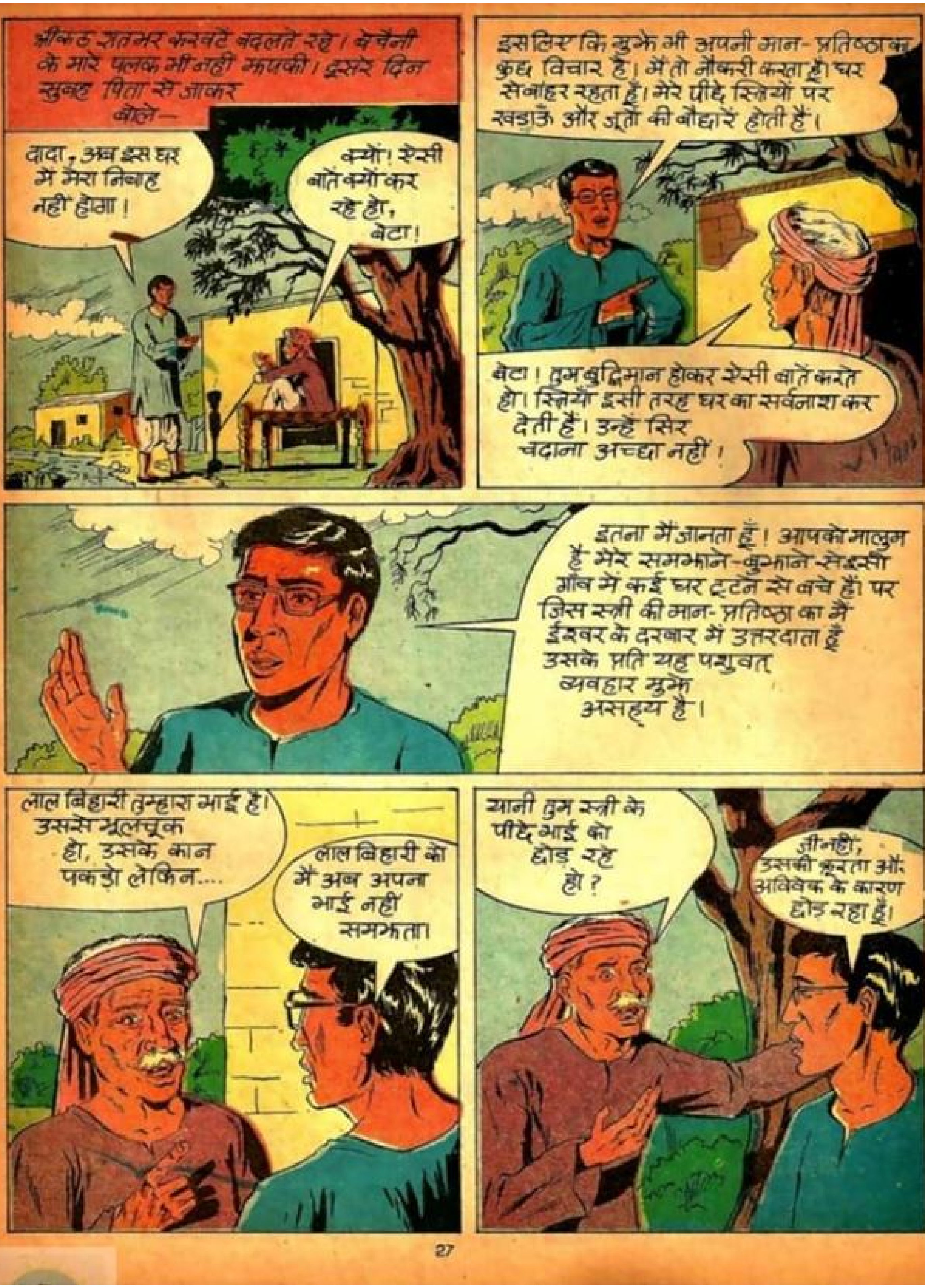

आनंदी बड़े घर की बेटी थी। उसके पिता एक बड़े ज़मींदार थे और उसका पालन-पोषण बड़े वैभव-ऐश्वर्य में हुआ था। एक दिन वह खाना बनाकर ही चुकी थी कि लाल बिहारी घर में घुसा।
भाभी, यह मांस पका दो। मुझे बड़ी भूख लगी है।
कुछ देर बाद—
क्या बात है, भाभी? आज दाल में घी भी नज़र नहीं आ रहा!
थोड़ा-सा घी था वह मैंने मांस में डाल दिया।
अभी परसों ही तो मैं घी खरीद कर लाया था। इतनी जल्दी ख़त्म हो गया?
ठीक है, पर आज तो घर में पाव भर भी घी मुश्किल से था और वह मैंने मांस पकाने के लिए डाल दिया।
लाल बिहारी ने तुनक कर जवाब दिया—
हाँ, हाँ! तुम्हारे मैके में तो घी की नदियाँ बहती हैं!


औरत गालियाँ रवा सकती है, मार सह सकती है मगर अपने माँ-बाप की निंदा सहन नहीं कर सकती। आनंदी भी भड़क उठी—
तुम्हें क्या मालुम कि मेरे मैके में इतना घी तो नाई-कहार खा जाते हैं।
लालबिहारी ने आपे से बाहर होकर थाली उठाकर पटक दी—
इतना बक बक कर रही हो, जी चाहता है जीभ पकड़ कर खींच लूं!
आज अगर वे यहाँ होते तो तुम्हें इसका मज़ा चखा देते!
अपढ़-उजड्ड लाल बिहारी मौका पाते ही कभी भी अपनी पत्नी पर हाथ उठा बैठता था। इस तरह की बात पचा जाना उसके लिए मुश्किल था।
जिसके गुमान पर भूली हो, उसे भी देख लूँगा और तुम्हें भी।


लाल बिहारी ने खड़ाऊँ फेंक कर उसके मारी। उसे उसने हाथ से बचाया। सिर तो बच गया पर उँगली में चोट लगी। गुस्से के मारे वह पत्ते की तरह काँप उठी। वह झटपट अपने कमरे में जा घुसी।
न तो वह कमरे से बाहर निकली, न उसने कुछ खाया-पिया। बस लेटे-लेटे पति के गाँव आने का इन्तज़ार करती रही।
इस कांड के दो दिन बाद श्रीकंठ हमेशा की तरह शनिवार–इतवार गाँव में अपने घर पर बिताने के लिए आया। कुछ देर वह आँगन में बैठकर सुस्ताता रहा। वहाँ उसके पिता और भाई पहले से बैठे हुए थे।
भैया, ज़रा भाभी को समझा दीजिएगा कि मुँह सँभालकर बात किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जायेगा
लाल बिहारी ठीक कह रहा है। बहू-बेटियों को यह शोभा नहीं देता कि मर्दों के मुँह लगें।
वे बड़े घर की बेटी हैं तो हम भी कोई कुर्मी-कहार नहीं हैं।
मुझे बताओ तो सही, आखिर बात क्या है?
कुछ भी नहीं, यों ही आप ही आप उलझ पड़ीं। मैके के सामने हम लोगों को कुछ समझतीं ही नहीं।



खा-पी चुकने के बाद श्रीकंठ आनंदी के पास गये।
चित तो प्रसन्न है?
बहुत प्रसन्न है! पर तुमने आजकल घर में क्या उपद्रव मचा रखा है!
जिसने तुमसे यह आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुँह झुलस दूँ!
इतनी गरम क्यों होती हो? मुझे सब बात तो बताओ।
मैं क्या बताऊँ। यह सब मेरे भाग्य का फेर है। नहीं तो एक गंवार छोकरा जिसे चपरासगिरी करने का भी शऊर नहीं, मुझे खड़ाऊँ से मारकर यों न अकड़ता!
सब साफ़-साफ़ हाल क्यों नहीं बताती हो? मुझे तो सचमुच कुछ भी पता नहीं!
आनंदी ने पूरा कांड कह सुनाया और सुना चुकने के बाद एकाएक सुबकने लगी।


श्रीकंठ रातभर करवटें बदलते रहे। बेचैनी के मारे पलक भी नहीं झपकी। दूसरे दिन सुबह पिता से आकर बोले—
दादा, अब इस घर में मेरा निबाह नहीं होगा।
क्यों! ऐसी बातें क्यों कर रहे हो, बेटा!
इसलिए कि मुझे भी अपनी मान-प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। मैं तो नौकरी करता हूँ घर से बाहर रहता हूँ। मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाऊँ और जूतों की बौछारें होती हैं।
बेटा! तुम बुद्धिमान होकर ऐसी बातें करते हो। स्त्रियाँ इसी तरह घर का सर्वनाश कर देती हैं। उन्हें सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।
इतना मैं जानता हूँ। आपको मालुम है मेरे समझाने-बुझाने से इसी गाँव में कई घर टूटने से बचे हैं। पर जिस स्त्री की मान-प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ उसके प्रति यह पशुवत् व्यवहार मुझे असह्य है।
लाल बिहारी तुम्हारा भाई है। उससे भूलचूक हो, उसके कान पकड़ो लेकिन....
लाल बिहारी को मैं अब अपना भाई नहीं समझता।
यानी तुम स्त्री के पीछे भाई को छोड़ रहे हो?
जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण छोड़ रहा हूँ।


इसी बीच गाँव के कुछ लोग कोई न कोई बहाना बना कर आ पहुँचे— वे देखना चाहते थे उस परिवार में क्या गुल खिल रहा है। बाप बेटे दोनों उनके सामने मौन बने रहे।
मैं जानता हूँ ये लोग क्यों इकट्ठे हो रहे हैं। मेरे घर के इस झगड़े में इन्हें मज़ा आ रहा है!
गाँव की कई औरतें यह जानकर बहुत खुश थीं कि श्रीकंठ अपने बाप और भाई से लड़ मरा है।
सम्मिलित परिवार के हमेशा बड़े गीत गाता था।
दूसरों को उपदेश देना बड़ा आसान होता है।
अब पता चला कहाँ चोट पड़ती है।
बेनी माधव सिंह परिवार को एक बनाये रखना चाहते थे। उन्होंने श्रीकंठ को शांत करने की कोशिश की।
लड़के ने अपराध ज़रूर किया है, मगर—
मैं लाल बिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।
लाल बिहारी भी वहीं आ खड़ा हुआ था।
बेटा, बुद्धिमान लोग मूर्खों की बातों पर ध्यान नहीं देते। वह तो बेसमझ लड़का है। उससे जो भूल हो गई, बड़े होने के नाते उसे तुम क्षमा कर दो
जी नहीं, मैं उसे क्षमा नहीं कर सकता। मैं उसका मुँह भी नहीं देखना चाहता। या तो इस घर में वही रहेगा, या मैं ही। आपको वह अधिक प्यारा है तो मुझे विदा कीजिए। यदि मुझे रखना चाहते हैं तो उससे कहिए चला जाये।


लाल बिहारी अपने भाई का बड़ा आदर करता था। श्रीकंठ ने उसके बारे में जो कुछ कहा था, उसे सुनकर उसका मन ग्लानि से भर गया।
मुझे क्या पता था कि भैया इस हद तक निर्दय हो उठेंगे। वे तो मेरा मुँह भी नहीं देखना चाहते!
वह आनंदी के पास गया—
भाभी, भैया कह रहे हैं कि वे मेरा मुँह भी नहीं देखना चाहते। इसलिए मैं घर छोड़ कर जा रहा हूँ। मैंने जो अपराध किया उसके लिए मुझे क्षमा कर देना।
भावावेग में लाल बिहारी का गला रुँध गया। तभी श्रीकंठ आया।
आनंदी स्वभाव से ही दयावती थी। आनंदी ने कभी सोचा भी न था कि बात यहाँ तक बढ़ आयेगी। मन से वह बहुत दुखी थी। आँखों में आँसू छलक आये थे। वह श्रीकंठ से बोली—
लाला बहुत रो रहे हैं।
तो मैं क्या करूँ?


उन्हें भीतर बुला लो। मेरी जीभ में आग लगे। मैंने कहाँ से यह झगड़ा उठाया।
मैं नहीं बुलाऊँगा।
पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो गई है। ऐसा न हो कहीं चल ही दें।
श्रीकंठ टस से मस न हुआ।
भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते, इस लिए मैं भी उन्हें अपना मुँह नहीं दिखाऊँगा।


आनंदी अपने कमरे से निकल आयी और उसका हाथ पकड़ लिया।
भाभी, मुझे जाने दो।
कहाँ जाओगे?
जहाँ कभी कोई मेरा मुँह न देख पाये।
मैं नहीं जाने दूँगी।
मैं तुम लोगों के साथ रहने लायक नहीं।
तुम्हें मेरी सौगंध! अब एक पग भी आगे न बढ़ना।
जब तक मुझे यह न मालूम हो जाये कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ़ हो गया, मैं इस घर में हरगिज़ न रहूँगा।


अब भ्रातृस्नेह से श्रीकंठ का हृदय भी पिघला। उसने बाहर आकर लाल बिहारी को गले लगा लिया।
भैया, अब कभी मत कहना कि तुम्हारा मुँह नहीं देखूँगा। और जो भी दंड आप देंगे मैं सहर्ष स्वीकार कर लूँगा!
लल्लू इन बातों को बिलकुल भूल जाओ! ईश्वर चाहेगा तो फिर ऐसा अवसर नहीं आयेगा।
तभी बेनी माधव सिंह बाहर से लौटकर घर में घुसे—
बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़े काम बना लेती हैं।
गाँव में जिस किसी ने कलह का यह सुखद अंत सुना उसने आनंदी की प्रशंसा की।
बड़े घर की बेटियों के ये ही काम होते हैं।
लंबरदार बड़े भाग्यवान हैं कि उन्हें ऐसी बहू मिली है!